एकवार्षिक स्नातकोत्तर परीक्षा पाठ्यक्रम

1- Year POST GRADUATE EXAMINATION SYLLABUS

आचार्य नव्यव्याकरण

Acharya Navyavyakaran

(Programme Code – AC-NVY)

L.O.C.F.

अधिगम परिणाम-आधारित पाठ्यचर्या रूपरेखा

2025-2026

(व्याकरण विभाग)

वेद-वेदाङ्ग एवं साहित्य सङ्काय

Faculty of Ved Vedanga evam Sahitya

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय

MAHARSHI PANINI SANSKRIT EVAM VEDIC VISHWAVIDYALAYA

देवास मार्ग, उज्जैन (मध्यप्रदेश) भारत, पिन - 456010

Email:- regpsvvmp@rediffmail.com, Website:- www.mpsvv.ac.in

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

परीक्षापाठ्यक्रम नियमावली

1. **पाठ्यक्रम का स्वरूप -**

अधिगम परिणाम-आधारित पाठ्यचर्या रूपरेखा (LOCF) पर आधारित एकवार्षिक आचार्य नव्यव्याकरण परीक्षा (नियमित एवं स्वाध्यायी) का पाठ्यक्रम दो सत्रार्द्धों में विभक्त होगा। पाठ्यक्रम में प्रतिसत्रार्द्ध 5 प्रश्नपत्र होंगे। 5-5 क्रेडिट के चार अनिवार्य प्रश्नपत्र मूल विषय के होंगे। पाँचवें प्रश्नपत्र के रूप में 2 क्रेडिट के प्रशिक्षुता/सङ्गोष्ठी/मूल्याधारित पाठ्यक्रम आदि शासन द्वारा जारी अध्यादेश 14 (2) के अनुसार होंगे। छात्रों द्वारा VAC पाठ्यक्रम अन्य विषय से भी चयन किये जा सकेंगे। पाठ्यक्रम में प्रथम 4 प्रश्नपत्रों हेतु पूर्णाङ्क 100 है। जिसमें 40 अङ्कों का आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा 60 अङ्कों की सैद्धान्तिक (बाह्य) परीक्षा होगी।

2. **प्रवेशनियम**

एकवार्षिक आचार्य नव्यव्याकरण परीक्षा में निम्नलिखित परीक्षोत्तीर्ण छात्र प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे -

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नईदिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय/संस्थान से व्याकरण विषय में चतुर्वार्षिक/शास्त्री बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण छात्र प्रवेशार्ह होंगे।

3. **परीक्षायोजना**

1. एकवार्षिक आचार्य नव्यव्याकरण परीक्षा का माध्यम हिन्दी अथवा संस्कृत होगा। परियोजना प्रतिवेदन/लघुशोधप्रबन्ध की भाषा भी संस्कृत अथवा हिन्दी होगी।

4. **प्रश्नपत्रनिर्माणयोजना -**

मुख्य पाठ्यक्रमों हेतु

प्रतिप्रश्नपत्र अधोलिखित अनुसार त्रिविध प्रश्न होंगे। उनमें प्रत्येक प्रश्न में एक विकल्प अनिवार्य रहेगा।

क्रमांक	प्रश्नप्रकार	प्रश्नसङ्ख्या	अङ्क	योग
1	बहुविकल्पकीय	5	1	5
2	लघूत्तरीय/टिप्पण्यात्मक	5	3	15
3	निबन्धात्मक/व्याख्यात्मक	5	8	40
4	आन्तरिकमूल्याङ्कन			40
योग				100 अङ्क

VAC पाठ्यक्रमों हेतु

प्रतिप्रश्नपत्र अधोलिखित अनुसार त्रिविध प्रश्न होंगे। उनमें प्रत्येक प्रश्न में एक विकल्प अनिवार्य रहेगा।

क्रमांक	प्रश्नप्रकार	प्रश्नसङ्ख्या	अङ्क	योग
1	बहुविकल्पकीय	5	2	10
2	लघूत्तरीय/टिप्पण्यात्मक	5	6	30
3	निबन्धात्मक/व्याख्यात्मक	5	12	60
योग				100 अङ्क

5. **ग्रेडिंगपद्धति-**

एकवार्षिक आचार्य नव्यव्याकरण परीक्षा में परीक्षाफल प्रकाशन में ग्रेडिंग पद्धति अपनायी जाएगी।

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

CONVERSION OF MARKS INTO GRADE AND GRADE POINT			
MARKS OBTAINED	GRADE	GRADE POINT	DESCRIPTION
> 90%	O	10	Outstanding
> 80%	A+	9	Excellent
>70%	A	8	Very Good
>60%	B+	7	Good
>50%	B	6	Above Average
>40%	C	5	Average
40%	P	4	Pass
<40%	F	0	Fail
Ab	Ab	0	Absent

Equivalent Percentage= CGPA X 10

The Maximum Marks per paper is fixed at 100

(If it is less or more than 100, convert it into 100 for grading)

Cumulative Grade Point Average

Based on the grades obtained in all the subjects registered for by a student, his or her cumulative Grade point Average Semester Grade Point Average (SGPA) and Cumulative Grade Point Average (CGPA) is calculated as follows:

$$\textbf{SGPA/CGPA} = \frac{\sum (\textbf{No. of credits in Semester}_i * \textbf{Grade Point in Semester}_i)}{\sum (\textbf{No. of Credits in Semester}_i)}$$

SGPA/CGPA is rounded off to the decimal Place.

- जो छात्र किसी सत्रार्द्ध के कुछ पाठ्यक्रमों (प्रश्नपत्रों) में अनुत्तीर्ण होते हैं, किन्तु यदि वे सत्रार्द्ध के कुल क्रेडिट (22) का 40% (अर्थात् 9 क्रेडिट) प्राप्त कर लेते हैं, तो उन्हें अनन्तिम रूप से अग्रिम सत्रार्द्ध में प्रोन्नत किया जावेगा तथा अनुत्तीर्ण पाठ्यक्रमों में उन्हें **एटीकेटी** प्राप्त होगी।
- शोध प्रबन्ध/परियोजना/सङ्गोष्ठी को पूर्ण न कर सके अथवा असफल रहे छात्रों को दो सत्रार्द्ध तक इन्हें दोहराने का अवसर मिलेगा। यदि दोनों सत्रार्द्ध में छात्र इन्हें पूर्ण नहीं कर सका, तो वह सम्बन्धित उपाधि का पात्र नहीं होगा।

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

6. उपलब्ध स्थान -

उक्त पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु उपलब्ध स्थान प्रवेश अधिसूचना द्वारा निर्धारित होंगे। प्रवेश के लिए उपलब्ध स्थानों पर राज्यशासन के नियमानुसार आरक्षण प्रदान किया जाएगा। अधिक प्रवेशार्थी होने की स्थिति में प्रत्येक सत्र में विश्वविद्यालय प्रशासन से स्थानवृद्धि की स्वीकृति प्राप्त करना अनिवार्य होगा।

7. शुल्क -

छात्रों का प्रवेश शुल्क, परीक्षा तथा अन्य विभिन्न गतिविधियों का शुल्क विश्वविद्यालय के सम्बन्धित अध्यादेश के प्रावधानों के अनुसार निर्धारित किया जाएगा, जिन्हें समय-समय पर आवश्यक होने पर संशोधित किया जा सकेगा।

8. परीक्षा सञ्चालन एवं उपाधि की पात्रता -

प्रस्तुत पाठ्यक्रम की परीक्षा का सञ्चालन विश्वविद्यालय द्वारा सम्बन्धित अध्यादेशों में विहित प्रावधानों के अनुसार किया जायेगा। उक्त स्नातकोत्तर परीक्षा पूर्ण करने के पश्चात् उत्तीर्ण होने पर **एकवार्षिक आचार्य नव्यव्याकरण** की उपाधि प्रदान की जाएगी।

9. अवधि-

अध्यादेश 14 (2) के अनुसार एकवार्षिक स्नातकोत्तर कार्यक्रम को **अधिकतम दो वर्षों में पूर्ण करना अनिवार्य है।**

10. सङ्गोष्ठी पाठ्यक्रम सञ्चालन- छात्रों द्वारा प्रथम सत्रार्द्ध हेतु सङ्गोष्ठी पाठ्यक्रम चयन किये जाने पर विभागाध्यक्ष द्वारा सम्बद्ध विषय में मुख्य चार पाठ्यक्रमों पर आधारित सङ्गोष्ठी शीर्षकों की विस्तृत सूची जारी की जावेगी, जिन पर कक्षा में विमर्श किया जावे। परीक्षा आन्तरिक मूल्याङ्कन द्वारा सम्पादित की जावेगी। जो भी छात्र सङ्गोष्ठी पाठ्यक्रम स्वीकार करेंगे, उन्हें उस सत्रार्द्ध की अवधि में राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की न्यूनतम एक सङ्गोष्ठी/कार्यशाला/परिसंवाद में सहभागिता करना अनिवार्य होगा तथा सम्बन्धित सङ्गोष्ठी/कार्यशाला/परिसंवाद का प्रतिवेदन, प्रमाणपत्र एवं शोधपत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य रहेगा।

11. कार्यक्रम योजना

वर्ष/ सत्रार्द्ध		पाठ्यक्रम प्रकार				कुल क्रेडिट
		मुख्य पाठ्यक्रम एवं क्रेडिट			इन्टर्नशिप/ अप्रेंटिसशिप/ सङ्गोष्ठी अथवा VAC (CHM/ EEMC)	
		पाठ्यक्रम स्तर	मुख्य पाठ्यक्रम	क्रेडिट		
विकल्प- 1 (केवल पाठ्यक्रम कार्य)						
प्रथम	प्रथम सत्रार्द्ध	500	CC-31 वाक्यपदीयम् (आदितः द्विसप्ततिकारिकां यावत्)	5	सङ्गोष्ठी (2 क्रेडिट)	22
		500	CC-32 महाभाष्यम् 8 आह्निकम्, वै.सि.ल. मञ्जूषा (शक्तिनिरूपणम्)	5		

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

वर्ष		500	CC-33 सर्वदर्शनसंग्रहः	5		
		500	CC-34 व्याकरणशास्त्रस्येतिहासः	5		
	द्वितीय सत्रार्द्ध	500	CC-41 वाक्यपदीयम् (द्विसप्ततिकारिकातः ब्रह्मकाण्डान्तं यावत्)	5	VAC (CHM/ EEMC) (2 क्रेडिट)	22
		500	CC-42 महाभाष्यम् 9 आह्निकम् वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जुषायाः लक्षणा व्यञ्जना च	5		
		500	CC-43 सर्वदर्शनसंग्रहः (वैशेषिकदर्शनम् इत्यारभ्य शाङ्करदर्शनं यावत्)	5		
		500	CC-44 व्याकरणशास्त्रीयनिबन्धः	5		
विकल्प- 2 (पाठ्यक्रम कार्य एवं शोध कार्य)						
प्रथम वर्ष	प्रथम सत्रार्द्ध	500	CC-31 वाक्यपदीयम् (आदितः द्विसप्ततिकारिकां यावत्)	5	सङ्गोष्ठी (2 क्रेडिट)	22
		500	CC-32 महाभाष्यम् 8 आह्निकम्, वै.सि.ल. मञ्जूषा (शक्तिनिरूपणम्)	5		
		500	CC-33 सर्वदर्शनसंग्रहः	5		
		500	CC-34 व्याकरणशास्त्रस्येतिहासः	5		
	द्वितीय सत्रार्द्ध	शोधनिबन्ध/ परियोजना/ पेटेन्ट (अन्तः अथवा बाह्य)				22
विकल्प- 3 (केवल शोध कार्य)						
प्रथम वर्ष	प्रथम सत्रार्द्ध	शोधनिबन्ध/ परियोजना/ पेटेन्ट (अन्तः अथवा बाह्य)				**22**
	द्वितीय सत्रार्द्ध	शोधनिबन्ध/ परियोजना/ पेटेन्ट (अन्तः अथवा बाह्य)				**22**

पाठ्यक्रम प्रकार

मुख्य पाठ्यक्रम (Core Course) CC- किसी विषय/कार्यक्रम का अनिवार्य पाठ्यक्रम जिसका उद्देश्य विषय/कार्यक्रम का आवश्यक मौलिक, व्यापक और उन्नत ज्ञान प्रदान करना है।

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि
उज्जैन (म.प्र.)

मूल्य-संवर्धित पाठ्यक्रम (Value-Added Course) VAC - मूल्यवर्धित पाठ्यक्रम विशिष्ट पाठ्यक्रम होते हैं जो छात्रों को नियमित पाठ्यक्रम से परे, किसी विशिष्ट क्षेत्र में अतिरिक्त कौशल, ज्ञान और विशेषज्ञता प्रदान करते हैं। ये पाठ्यक्रम छात्रों की रोज़गार क्षमता, करियर की संभावनाओं और व्यक्तिगत विकास को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

संवैधानिक, मानवीय और नैतिक मूल्य (Constitutional, Human and Moral) CHM- ये 'मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम' हैं जिनका उद्देश्य संवैधानिक, मानवीय एवं नैतिक मूल्यों तथा बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) पर शिक्षा एवं अभ्यास प्रदान करना है।

रोजगार एवं उद्यमिता कौशल पाठ्यक्रम (Employability and Entrepreneurship Skill Course) EEMC-
रोजगार योग्यता एवं उद्यमिता कौशल पाठ्यक्रम एक ऐसा पाठ्यक्रम है, जिसका उद्देश्य रोजगार योग्यता कौशल को बढ़ाना और प्रमुख व्यक्तिगत विशेषताओं को विकसित करना है, जो रोजगार क्षमता पैदा करने और कार्यस्थल पर प्रभावी प्रदर्शन के लिए तैयार करने के लिए आवश्यक हैं।

प्रशिक्षुता (Internship)- इंटर्नशिप किसी व्यक्ति द्वारा किसी संगठन में काम करने के ढङ्ग को समझने के अतिरिक्त, किसी विशिष्ट कार्य या भूमिका के लिए कौशल योग्यता में सुधार और सीखने के अवसरों के साथ-साथ शोध क्षमताओं का निर्माण करने के लिए भी की जाती है। इंटर्नशिप इस प्रकार आयोजित की जानी चाहिए कि इससे इंटर्न के साथ-साथ इंटर्नशिप प्रदान करने वाले संगठन को भी लाभ हो।
कार्यस्थल के लिए आवश्यक सही दृष्टिकोण के साथ व्यावहारिक अनुभव और अनुभव विकसित करके स्नातकोत्तरों की रोजगार क्षमता में सुधार किया जा सकता है। इंटर्नशिप उन महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक है जो इन रोजगार कौशलों को बेहतर बनाने में मदद करते हैं और छात्रों में रोजगार के लिए योग्यता, क्षमता, पेशेवर कार्य कौशल, विशेषज्ञता और आत्मविश्वास पैदा करने और शोध के प्रति रुचि/जुनून विकसित करने में मदद कर सकते हैं। इंटर्न कार्यस्थल में सिद्धांत के अनुप्रयोग को समझ सकते हैं। इंटर्नशिप को मोटे तौर पर दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है-
i. रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए इंटर्नशिप
ii. शोध योग्यता विकसित करने के लिए इंटर्नशिप
शिक्षुता (Apprenticeship) - शिक्षुता प्रशिक्षण किसी भी उद्योग या प्रतिष्ठान में प्रशिक्षण का एक कोर्स है, जो नियोक्ता और शिक्षुओं के बीच शिक्षुता के अनुबंध के अनुसरण में और निर्धारित नियमों और शर्तों के अनुसार किया जाता है।
सङ्गोष्ठी (Seminar) – सङ्गोष्ठी गतिविधि आधारित पाठ्यक्रम हैं, जिनमें छात्र सामान्यतः अपनी कक्षा में तैयार किए गए प्रदत्त कार्य (Assignments), परियोजना (Project) / विषय बिन्दु तथा शीर्षक आधारित चर्चा (Theme & Topics) करते हैं।

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

भाग: अ – **परिचयः**			
कार्यक्रम : **उपाधि पाठ्यक्रम**	कक्षा : **द्विवर्षीयः आचार्यः (स्नातकोत्तरः)**	सत्रार्द्धः तृतीयः	सत्रम् **: 2025-26**
विषय : **नव्यव्याकरणम्**			

1.	पाठ्यक्रमस्य कूटः	PGO-VVNY31	
2.	पाठ्यक्रमस्य शीर्षकः	**वाक्यपदीयम्**	
3.	पाठ्यक्रमस्य प्रकारः	मुख्यविषयः (प्रथमप्रश्नपत्रम्)	
4.	पूर्वापेक्षा **(Pre-requisite)**(यद्यस्ति काचित्)	विश्वविद्यालयानुदानायोग-नवदेहलीद्वारा प्राप्तमान्यताविश्वविद्यालयस्य संस्थानस्य वा स्नातकपरीक्षोत्तीर्णाः तत्समकक्षपरीक्षोत्तीर्णाः वा प्रवेष्टुमर्हाः।	
5.	पाठ्यक्रमस्य अध्ययनोपलब्धिः **(CLO)**	शब्दब्रह्मणः शक्तिपरिज्ञानम्	
6.	क्रेडिटमानम्	**05** क्रेडिट	
7.	पूर्णांकाः	अधिकतमाङ्काः 40+60	न्यूनतमोत्तीर्णाङ्काः 40

भाग: ब – पाठ्यक्रमस्य विषयवस्तु		
व्याख्यानानां संख्या-ट्यूटोरियल-प्रायोगिक(प्रतिसप्ताहं – होरात्रयम्) : **L-T-P**		
एककः	**विषयः**	**व्याख्यानानां संख्या**
1	प्रथमकारिकातः पञ्चदशकारिकापर्यन्तम्। **गतिविधिः**- शुद्धकण्ठस्थीकरणार्थं प्रेरणं, तदनु कारिकाणां श्रवणम्, उपर्युक्तकारिकासु प्रतिपाद्यविषयस्य छात्रैः लेखनकार्यं कारयेत्।	**15**
2	षोडशकारिकायाः त्रिंशत्कारिकापर्यन्तम्। **गतिविधिः**- शुद्धकण्ठस्थीकरणार्थं प्रेरणं, तदनु कारिकाणां श्रवणम्, उपर्युक्तकारिकासु प्रतिपाद्यविषयस्य छात्रैः मिथः विचारः कारयेत्।	**15**
3	एकत्रिंशत्कारिकायाः पञ्चचत्वारिंशत्कारिकां यावत्। **गतिविधिः**- शुद्धकण्ठस्थीकरणार्थं प्रेरणं, तदनु कारिकाणां श्रवणम्, उपर्युक्तकारिकासु प्रतिपाद्यविषयस्य छात्रैः लेखनकार्यं कारयेत्।	**15**
4	षट्चत्वारिंशत्कारिकायाः षष्टिकारिकां यावत्। **गतिविधिः**- शुद्धकण्ठस्थीकरणार्थं प्रेरणं, तदनु कारिकाणां श्रवणम्, उपर्युक्तकारिकासु प्रतिपाद्यविषयस्य छात्रैः लेखनकार्यं कारयेत्।	**15**
5	एकषष्ठिकारिकायाः द्विसप्ततिकारिकां यावत् । **गतिविधिः**- शुद्धकण्ठस्थीकरणार्थं प्रेरणं, तदनु कारिकाणां श्रवणम्, उपर्युक्तकारिकासु प्रतिपाद्यविषयस्य छात्रैः वाक्यार्थं कारयेत्।	**15**
सारबिन्दुः(की वर्ड/टैग) : ब्रह्मस्वरुपं, कालशक्तिः,		

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि
उज्जैन (म.प्र.)

भाग: स – अनुशंसिताध्ययनसंसाधनानि
पाठ्यपुस्तकानि, सन्दर्भग्रन्था:, अन्यसंसाधनानि

क. अनुशंसितसहायकपुस्तकानि/ग्रन्था:/अन्यपाठ्यसंसाधनानि/पाठ्यसामग्री-

1. वाक्यपदीयम्, सूर्यनारायण शुक्ल चौखम्बासुरभारतीप्रकाशनम्, वाराणसी
2. वाक्यपदीयम् (अम्बाकर्त्री) श्री पद्मश्री पण्डितरघुनाथशर्मा सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय वाराणसी
1. Reference Books

- अष्टाध्यायी - पाणिनिविरचिता, सम्पादनं - श्रीगोपालदत्तपाण्डेय:, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी - 221 001।
- परिभाषेन्दुशेखरः - महामहोपाध्याय-नागेशभट्टविरचितः, सम्पादकः – सदाशिवशास्त्री, चौखम्भासंस्कृतसंस्थानम्, के.३७/११६, गोपाल् मन्दिर् लेन्, वाराणसी – २२१ ००१
- महाभाष्यम् – पतञ्जलिविरचितम्, संस्कर्ता – श्रीगुरुप्रसादशास्त्री, सम्पादकः – श्रीनन्दकिशोरशास्त्री, प्रतिभाप्रकाशनं, २९/५, शक्तिनगर, दिल्ली – ११० ००७।
- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - भट्टोजिदीक्षितप्रणीता (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनीसहिता), सम्पादक: - म.म.पं.गिरिधरशर्मा चतुर्वेद:, म.म.पं.परमेश्वरानन्दशर्मा विद्याभास्कर:, मोतिलाल बनारसीदास, बङ्गलो रोड, दिल्ली - 110 007।

ख. अनुशंसितडिजिटलप्लेटफार्मवेबलिंक

1. http://vedicheritage.gov.in

अनुशंसित-समकक्ष:- ऑनलाईनपाठ्यक्रम:-

1. Sanskrit.inira.fr/
2. Learnsanskrit.cc/index
3. Swayam.gov.in

भाग: द – अनुशंसितमूल्यांकनविधय:
अनुशंसितसततमूल्यांकनविधय: - लिखितपरीक्षा, आन्तरिकमूल्यांकनम्, साक्षात्कारविधि:, वाग्व्यवहारविधि: अधिकतमांक : 100 सततव्यापकमूल्यांकनम् (CCE) अंक: 40 विश्वविद्यालयीयपरीक्षा (UE) अंक: 60

आन्तरिकमूल्यांकनम् : सततव्यापकमूल्यांकनम्(CCE) :	कक्षापरीक्षणम् Assignment/प्रस्तुतीकरणम्	पूर्णांका: 40
आकलनम् : विश्वविद्यालयीयपरीक्षा :	अनुभाग: (अ) : अतिलघूत्तरीयप्रश्ना: 5×1=5 अनुभाग: (ब) : लघूत्तरीयप्रश्ना: 5×3=15 अनुभाग: (स) : दीर्घोत्तरीयप्रश्ना: 5×8=40	पूर्णांका: 60
टिप्पणी :		

हस्ता/:
अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि,
उज्जैन (म.प्र.)

भागः अ – **परिचयः**			
कार्यक्रम : **उपाधि पाठ्यक्रम**	कक्षा : **द्विवर्षीयः आचार्यः (स्नातकोत्तरः)**	सत्रार्द्धः **तृतीयः**	सत्रम् **: 2025-26**
विषय : नव्यव्याकरणम्			

1.	पाठ्यक्रमस्य कूटः	PGO-VVNY32	
2.	पाठ्यक्रमस्य शीर्षकः	**महाभाष्यम् (8 आह्निकम्) वै.सि.ल.मञ्जूषा (शक्तिनिरूपणम्)**	
3.	पाठ्यक्रमस्य प्रकारः	मुख्यविषयः (द्वितीयप्रश्नपत्रम्)	
4.	पूर्वापेक्षा (**Pre-requisite**)(यद्यस्ति काचित्)	विश्वविद्यालयानुदानायोग-नवदेहलीद्वारा प्राप्तमान्यताविश्वविद्यालयस्य संस्थानस्य वा स्नातकपरीक्षोत्तीर्णाः तत्समकक्षपरीक्षोत्तीर्णाः वा प्रवेष्टुमर्हाः।	
5.	पाठ्यक्रमस्य अध्ययनोपलब्धिः (**CLO**)	1.सप्तमाह्निकस्थसमग्रसूत्राणां पर्यवसानम् । 2.वृत्तिमादाय विचारः।	
6.	क्रेडिटमानम्	**05** क्रेडिट	
7.	पूर्णाङ्का:	अधिकतमाङ्काः 40+60	न्यूनतमोत्तीर्णाङ्काः 40

भागः ब – पाठ्यक्रमस्य विषयवस्तु		
व्याख्यानानां संख्या-ट्यूटोरियल-प्रायोगिक(प्रतिसप्ताहं – होरात्रयम्) : **L-T-P**		
एककः	**विषयः**	**व्याख्यानानां संख्या**
1	स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ । **गतिविधयः**- स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ वत्करणं किमर्थम्? स्वंरूपविधिर्नाम। सामान्यातिदेशे हि विशेषानतिदेशः जात्याख्यायां बहुवचनातिदेशे स्थानिवद्भावप्रतिषेधः इति विचारणा विहिता। **गतिविधिः**- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
2	अचःपरस्मिन्पूर्वविधौ इत्यतः न पदान्तद्विर्वचन । अचः परस्मिन् पूर्वविधौ अचेति किमर्थम्? अथ परस्मिन्निति किमर्थम् ? अथ पूर्वविधाविति किमर्थम् ? कानि पुनः स्वविधौ स्थानिवद्भावस्य प्रयोजनानि ? कानि पुनरस्य योगस्य प्रयोजनानि ? इति विचारणा विहिता। **गतिविधिः**- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
3	द्विर्वचनेऽचि इत्यतःअष्टमाह्निकम् । न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु, द्विर्वचनेऽचि इति सूत्रद्वयोः विचारो वर्तते। **गतिविधिः**- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
4	सिद्धान्तलघुमञ्जूषा- आदितः आर्यम्लेच्छाधिकरणतात्पर्यनिरूपणं यावद् वैयाकरणमतेन शक्तिनिरूपणं, शक्तिविषये नैयायिकमीमांसकादि-मतान्तराशयावगमनं च। वैयाकरणमतेन शक्तिनिरूपणं, परादिवाङ्निरूपणम् इत्यादि । **गतिविधिः**- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
5	सिद्धान्तलघुमञ्जुषा – आर्यम्लेच्छयोस्तुल्यत्वं शिष्टत्वम् इत्यतः शक्तिनिरूपणं यावद्	**15**

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

	वैयाकरणमतेन शक्तिनिरूपणम्, अपभ्रंशानां साधुत्वाभावः इत्यादीनां विषयाणामवगमनं च। **गतिविधिः**- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	

सारबिन्दुः(की वर्ड/टैग) :

भागः स – अनुशंसिताध्ययनसंसाधनानि

पाठ्यपुस्तकानि, सन्दर्भग्रन्थाः, अन्यसंसाधनानि

क. अनुशंसितसहायकपुस्तकानि/ग्रन्थाः/अन्यपाठ्यसंसाधनानि/पाठ्यसामग्री-

1. महाभाष्यम् भार्गवशास्त्री चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान ,नई दिल्ली
2. व्याकरणमहाभाष्य जयशङ्करलाल त्रिपाठी चौखम्बा कृष्णदास अकादमी
3. व्याकरणमहाभाष्य आचार्य मधुसूदनप्रसादमिश्र चौखम्बाविद्याभवन वाराणसी
4. व्याकरणमहाभाष्य के.वी. अभ्यङ्कर भण्टारकर आरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पुणे
5. व्याकरणमहाभाष्य हिन्दी टीकासंवलित हरिनारायणतिवारी चौखम्बासुरभारती वाराणसी, उ.प्र.
6. वैयाकरणसिद्धान्तकल्पतरुः, डॉ. पङ्कजकुमारव्यासः, कविकुलगुरुकालिदाससंस्कृतविश्वविद्यालयः, रामटेक्
7. Reference Books

- अष्टाध्यायी - पाणिनिविरचिता, सम्पादनं - श्रीगोपालदत्तपाण्डेयः, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी - 221 001।
- परिभाषेन्दुशेखरः - महामहोपाध्याय-नागेशभट्टविरचितः, सम्पादकः – सदाशिवशास्त्री, चौखम्भासंस्कृतसंस्थानम्, के.३७/११६, गोपाल् मन्दिर् लेन्, वाराणसी – २२१ ००१
- महाभाष्यम् – पतञ्जलिविरचितम्, संस्कर्ता – श्रीगुरुप्रसादशास्त्री, सम्पादकः – श्रीनन्दकिशोरशास्त्री, प्रतिभाप्रकाशनं, २९/५, शक्तिनगर, दिल्ली – ११० ००७।
- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - भट्टोजिदीक्षितप्रणीता (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनीसहिता), सम्पादकः - म.म.पं.गिरिधरशर्मा चतुर्वेदः, म.म.पं.परमेश्वरानन्दशर्मा विद्याभास्करः, मोतिलाल बनारसीदास, बङ्गलो रोड, दिल्ली - 110 007।

ख. अनुशंसितडिजिटलप्लेटफार्मवेबलिंक

1. http://vedicheritage.gov.in

अनुशंसित-समकक्षः- ऑनलाईनपाठ्यक्रमः-

1. Sanskrit.inira.fr/
2. Learnsanskrit.cc/index
3. Swayam.gov.in

भागः द – अनुशंसितमूल्यांकनविधयः

अनुशंसितसततमूल्यांकनविधयः - लिखितपरीक्षा, आन्तरिकमूल्यांकनम्, साक्षात्कारविधिः, वाग्व्यवहारविधिः
अधिकतमांक : 100
सततव्यापकमूल्यांकनम् (CCE) अंकः 40 विश्वविद्यालयीयपरीक्षा (UE) अंकः 60

आन्तरिकमूल्यांकनम् : सततव्यापकमूल्यांकनम्(CCE) :	कक्षापरीक्षणम् Assignment/प्रस्तुतीकरणम्	पूर्णांकाः 40
आकलनम् : विश्वविद्यालयीयपरीक्षा :	अनुभागः (अ) : अतिलघूत्तरीयप्रश्नाः 5×1=5 अनुभागः (ब) : लघूत्तरीयप्रश्नाः 5×3=15 अनुभागः (स) : दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः 5×8=40	पूर्णांकाः 60

टिप्पणी :

व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

<table>
<tr><td colspan="4">भाग: अ – परिचय:</td></tr>
<tr><td colspan="2">कार्यक्रम : उपाधि पाठ्यक्रम</td><td>कक्षा : द्विवर्षीय: आचार्य: (स्नातकोत्तर:)</td><td>सत्रार्द्ध:-तृतीय: | सत्रम् : 2025-26</td></tr>
<tr><td colspan="4">विषय : नव्यव्याकरणम्</td></tr>
<tr><td>1.</td><td>पाठ्यक्रमस्य कूट:</td><td colspan="2">PGO-VVNY 33</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>पाठ्यक्रमस्य शीर्षक:</td><td colspan="2">सर्वदर्शनसङ्ग्रह:</td></tr>
<tr><td>3.</td><td>पाठ्यक्रमस्य प्रकार:</td><td colspan="2">मुख्यविषय: (तृतीयप्रश्नपत्रम्)</td></tr>
<tr><td>4.</td><td>पूर्वापेक्षा (Pre-requisite)(यद्यस्ति काचित्)</td><td colspan="2">विश्वविद्यालयानुदानायोग-नवदेहलीद्वारा प्राप्तमान्यताविश्वविद्यालयस्य संस्थानस्य वा स्नातकपरीक्षोत्तीर्णा: तत्समकक्षपरीक्षोत्तीर्णा: वा प्रवेष्टुमर्हा:।</td></tr>
<tr><td>5.</td><td>पाठ्यक्रमस्य अध्ययनोपलब्धि: (CLO)</td><td colspan="2">1.समग्रदर्शनसिद्धान्तस्य परिचयो भविष्यति।
2.आस्तिकनास्तिकदर्शनयोः प्रतिपाद्यपदार्थानां प्रमाणानामपि परिचयो भविष्यति।</td></tr>
<tr><td>6.</td><td>क्रेडिटमानम्</td><td colspan="2">05 क्रेडिट</td></tr>
<tr><td>7.</td><td>पूर्णाङ्का:</td><td>अधिकतमाङ्का: 40+60</td><td>न्यूनतमोत्तीर्णाङ्का: 40</td></tr>
<tr><td colspan="4">भाग: ब – पाठ्यक्रमस्य विषयवस्तु</td></tr>
<tr><td colspan="4">व्याख्यानानां संख्या-ट्यूटोरियल-प्रायोगिक(प्रतिसप्ताहं – होरात्रयम्) : L-T-P</td></tr>
<tr><td>एकक:</td><td colspan="2">विषय:</td><td>व्याख्यानानां संख्या</td></tr>
<tr><td>1</td><td colspan="2">चार्वाकदर्शनम् बौद्धदर्शनम् च।
गतिविधि: –अत्र चार्वाकाणां बौद्धानां च प्रमेयप्रमाणतत्त्वाणाञ्च विचारः वर्तते।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>2</td><td colspan="2">जैनदर्शनम् विशिष्टाद्वैतदर्शनम् च।
गतिविधि:-अत्र जैनदर्शने रामानुजदर्शने च प्रतिपाद्य-प्रमेयप्रमाणप्रयोजनादि-विचारः वर्तते।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>3</td><td colspan="2">पूर्णप्रज्ञदर्शनम्
गतिविधि:- अस्मिन् दर्शने प्रतिपाद्यप्रमेयप्रमाणदिविचारस्य अध्ययनम्।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>4</td><td colspan="2">नकुलीशपशुपतदर्शनम् तथा शैवदर्शनम्
गतिविधि: – अत्र पाशुपतशैवदर्शनयोः प्रमेयप्रमाणतत्त्वाणाञ्च विचारः वर्तते।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>5</td><td colspan="2">प्रत्यभिज्ञादर्शनम् रशेश्वरदर्शनञ्च।
गतिविधि: – अत्र प्रत्याभिज्ञारसेश्वरदर्शनोः प्रमेयप्रमाणतत्त्वाणाञ्च विचारः वर्तते।</td><td>15</td></tr>
<tr><td colspan="4">सारबिन्दु:(की वर्ड/टैग) : दार्शनिकसिद्धान्तानां परिज्ञानम्।</td></tr>
<tr><td colspan="4">भाग: स – अनुशंसिताध्ययनसंसाधनानि</td></tr>
<tr><td colspan="4">पाठ्यपुस्तकानि, सन्दर्भग्रन्था:, अन्यसंसाधनानि</td></tr>
</table>

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

क. **अनुशंसितसहायकपुस्तकानि/ग्रन्था:/अन्यपाठ्यसंसाधनानि/पाठ्यसामग्री-**

सर्वदर्शनसङ्ग्रह माधवाचार्य –प्रो. उमाशङ्कर ऋषि शर्मा -चौखम्बाविद्याभवन वाराणसी, उ.प्र.

2. सर्वदर्शनसङ्ग्रह माधवाचार्य –डां माधव जनार्दन रटाटे द भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी

Reference Books

- अष्टाध्यायी - पाणिनिविरचिता, सम्पादनं - श्रीगोपालदत्तपाण्डेय:, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी - 221 001।
- परिभाषेन्दुशेखरः - महामहोपाध्याय-नागेशभट्टविरचितः, सम्पादकः – सदाशिवशास्त्री, चौखम्भासंस्कृतसंस्थानम्, के.३७/११६, गोपाल् मन्दिर् लेन्, वाराणसी – २२१ ००१
- महाभाष्यम् – पतञ्जलिविरचितम्, संस्कर्ता – श्रीगुरुप्रसादशास्त्री, सम्पादकः – श्रीनन्दकिशोरशास्त्री, प्रतिभाप्रकाशनं, २९/५, शक्तिनगर, दिल्ली – ११० ००७।
- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - भट्टोजिदीक्षितप्रणीता (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनीसहिता), सम्पादक: - म.म.पं.गिरिधरशर्मा चतुर्वेद:, म.म.पं.परमेश्वरानन्दशर्मा विद्याभास्कर:, मोतिलाल बनारसीदास, बङ्गलो रोड, दिल्ली - 110 007।

ख. **अनुशंसितडिजिटलप्लेटफार्मवेबलिंक**

1. http://vedicheritage.gov.in

अनुशंसित-समकक्ष:- ऑनलाईनपाठ्यक्रम:-

1. Sanskrit.inira.fr/
2. Learnsanskrit.cc/index
3. Swayam.gov.in

भाग: द – अनुशंसितमूल्यांकनविधय:

अनुशंसितसततमूल्यांकनविधय: - लिखितपरीक्षा, आन्तरिकमूल्यांकनम्, साक्षात्कारविधि:, वाग्व्यवहारविधि:

अधिकतमांक : 100

सततव्यापकमूल्यांकनम् (**CCE**) अंक: 40 विश्वविद्यालयीयपरीक्षा (**UE**) अंक: 60

आन्तरिकमूल्यांकनम् : सततव्यापकमूल्यांकनम्(**CCE**) :	कक्षापरीक्षणम् Assignment/प्रस्तुतीकरणम्	पूर्णांका: 40
आकलनम् : विश्वविद्यालयीयपरीक्षा :	अनुभाग: (अ) : अतिलघूत्तरीयप्रश्ना: 5×1=5 अनुभाग: (ब) : लघूत्तरीयप्रश्ना: 5×3=15 अनुभाग: (स) : दीर्घोत्तरीयप्रश्ना: 5×8=40	पूर्णांका: 60

टिप्पणी :

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

भागः अ – **परिचयः**			
कार्यक्रम : **उपाधि पाठ्यक्रम**	कक्षा : **द्विवर्षीयः आचार्यः (स्नातकोत्तरः)**	सत्रार्द्धः **तृतीयः**	सत्रम् **: 2025-26**
विषय : नव्यव्याकरणम्			

1.	पाठ्यक्रमस्य कूटः	PGO-VVNY34	
2.	पाठ्यक्रमस्य शीर्षकः	**व्याकरणशास्त्रस्येतिहासः**	
3.	पाठ्यक्रमस्य प्रकारः	मुख्यविषयः (चतुर्थप्रश्नपत्रम्)	
4.	पूर्वापेक्षा **(Pre-requisite)**(यद्यस्ति काचित्)	विश्वविद्यालयानुदानायोग-नवदेहलीद्वारा प्राप्तमान्यताविश्वविद्यालयस्य संस्थानस्य वा स्नातकपरीक्षोत्तीर्णाः तत्समकक्षपरीक्षोत्तीर्णाः वा प्रवेष्टुमर्हाः।	
5.	पाठ्यक्रमस्य अध्ययनोपलब्धिः **(CLO)**	निबन्धरचनायाः परिज्ञानं भविष्यति। लेखनसमयेनिबन्धगतसन्धिसमासादिज्ञानं भविष्यति।	
6.	क्रेडिटमानम्	**05** क्रेडिट	
7.	पूर्णाङ्काः	अधिकतमाङ्काः 40+60	न्यूनतमोत्तीर्णाङ्काः 40

भागः ब – पाठ्यक्रमस्य विषयवस्तु		
व्याख्यानानां संख्या-ट्यूटोरियल-प्रायोगिक(प्रतिसप्ताहं – होरात्रयम्) : **L-T-P**		
एककः	**विषयः**	**व्याख्यानानां संख्या**
1	व्याकरणशास्त्रस्य प्रारम्भः विकासश्च । **गतिविधिः** – व्याकरणस्य लक्षणम्, व्याकरणशास्त्रस्य वेदमूलकत्वम्, नव- व्याकरणानि इत्यादीनां विचरणा वर्तते।	**15**
2	पाणिनिपरवर्ति षोडशाचार्याणां वृत्तम् । **गतिविधिः** – स्फोटायनः, सेनकः, शाकल्यः, शाकटायन, चाक्रवर्मणः, भारद्वाजः, गालवः , गार्ग्यः, काश्यपः , आपिशलिः।	**15**
3	अष्टाध्यायीवृत्तिकाराणां परिचयः। **गतिविधिः** –पतञ्जलेः, काशिकाकारादीनां वर्णनम्।	**15**
4	महाभाष्यकारपतञ्जलिपरिचयः भाष्यव्याख्याकाराणाम्परिचयश्च । **गतिविधिः** –कैयटः, अन्नम्भट्टः, नागेशः, वैद्यनाशपायगुण्डः, नारयणीकारः इत्यादीनां विचारणा वर्तते।	**15**
5	भर्तृहरिवाक्यपदीयपरिचयः। **गतिविधिः** – भर्तृहरेः देशकालकृत्यादीनां , वाक्यपदीयग्रन्थस्य तट्टीकादीनाञ्च विचारः वर्तते,प्रश्नोत्तरी।	**15**
सारबिन्दुः(की वर्ड/टैग) :		

भागः स – अनुशंसिताध्ययनसंसाधनानि
पाठ्यपुस्तकानि, सन्दर्भग्रन्थाः, अन्यसंसाधनानि

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

क. अनुशंसितसहायकपुस्तकानि/ग्रन्था:/अन्यपाठ्यसंसाधनानि/पाठ्यसामग्री-

1. संस्कृतसाहित्येतिहासः आचार्यलोकमणिदहालः चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, उ.प्र.
2. व्याकरण शास्त्र का इतिहास श्री युधिष्ठिर मीमांसक बहालगढ, सोनीपत, हरियाणा
3. काशी की पाण्डित्य परम्परा आ. बलदेव उपाध्याय ,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन ,वाराणसी
4. प्रो.अशोक चन्द्र गौड चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन ,वाराणसी

Reference Books

- अष्टाध्यायी - पाणिनिविरचिता, सम्पादनं - श्रीगोपालदत्तपाण्डेयः, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी - 221 001।
- परिभाषेन्दुशेखरः - महामहोपाध्याय-नागेशभट्टविरचितः, सम्पादकः – सदाशिवशास्त्री, चौखम्भासंस्कृतसंस्थानम्, के.३७/११६, गोपाल् मन्दिर् लेन्, वाराणसी – २२१ ००१
- महाभाष्यम् – पतञ्जलिविरचितम्, संस्कर्ता – श्रीगुरुप्रसादशास्त्री, सम्पादकः – श्रीनन्दकिशोरशास्त्री, प्रतिभाप्रकाशनं, २९/५, शक्तिनगर, दिल्ली – ११० ००७।
- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - भट्टोजिदीक्षितप्रणीता (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनीसहिता), सम्पादकः - म.म.पं.गिरिधरशर्मा चतुर्वेदः, म.म.पं.परमेश्वरानन्दशर्मा विद्याभास्करः, मोतिलाल बनारसीदास, बङ्गलो रोड, दिल्ली - 110 007।

ख. अनुशंसितडिजिटलप्लेटफार्मवेबलिंक

1. http://vedicheritage.gov.in

अनुशंसित-समकक्षः- ऑनलाईनपाठ्यक्रमः-

1. Sanskrit.inira.fr/
2. Learnsanskrit.cc/index
3. Swayam.gov.in

भाग: द – अनुशंसितमूल्यांकनविधय:

अनुशंसितसततमूल्यांकनविधय: - लिखितपरीक्षा, आन्तरिकमूल्यांकनम्, साक्षात्कारविधिः, वाग्व्यवहारविधि:
अधिकतमांक : 100
सततव्यापकमूल्यांकनम् (CCE) अंक: 40 विश्वविद्यालयीयपरीक्षा (UE) अंक: 60

आन्तरिकमूल्यांकनम् : सततव्यापकमूल्यांकनम्(CCE) :	कक्षापरीक्षणम् Assignment/प्रस्तुतीकरणम्	पूर्णांका: 40
आकलनम् : विश्वविद्यालयीयपरीक्षा :	अनुभाग: (अ) : अतिलघूत्तरीयप्रश्ना: 5×1=5 अनुभाग: (ब) : लघूत्तरीयप्रश्ना: 5×3=15 अनुभाग: (स) : दीर्घोत्तरीयप्रश्ना: 5×8=40	पूर्णांका: 60

टिप्पणी :

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

भागः अ – **परिचयः**			
कार्यक्रम : **उपाधि पाठ्यक्रम**	कक्षा : **द्विवर्षीयः आचार्यः (स्नातकोत्तरः)**	सत्रार्द्धः **चतुर्थः**	सत्रम् **: 2025-26**
विषय : **नव्यव्याकरणम्**			

1.	पाठ्यक्रमस्य कूटः	PGO-VVNY41	
2.	पाठ्यक्रमस्य शीर्षकः	**वाक्यपदीयम् (त्रिसप्ततिकारिकातः ब्रह्मकाण्डान्तं यावत्)**	
3.	पाठ्यक्रमस्य प्रकारः	मुख्यविषयः (प्रथमप्रश्नपत्रम्)	
4.	पूर्वापेक्षा **(Pre-requisite)**(यद्यस्ति काचित्)	विश्वविद्यालयानुदानायोग-नवदेहलीद्वारा प्राप्तमान्यताविश्वविद्यालयस्य संस्थानस्य वा स्नातकपरीक्षोत्तीर्णाः तत्समकक्षपरीक्षोत्तीर्णाः वा प्रवेष्टुमर्हाः।	
5.	पाठ्यक्रमस्य अध्ययनोपलब्धिः **(CLO)**	1.शब्दशक्तिपरिज्ञानं भविष्यति। 2.त्रिविधवाचः सम्यग् ज्ञानं भविष्यति।	
6.	क्रेडिटमानम्	**05** क्रेडिट	
7.	पूर्णाका:	अधिकतमाङ्का: 40+60	न्यूनतमोत्तीर्णाङ्का: 40

भागः ब – पाठ्यक्रमस्य विषयवस्तु		
व्याख्यानानां संख्या-ट्यूटोरियल-प्रायोगिक(प्रतिसप्ताहं – होरात्रयम्) : **L-T-P**		
एककः	**विषयः**	**व्याख्यानानां संख्या**
1	द्विसप्ततिकारिकातः पञ्चाशीतिकारिकापर्यन्तम्। **गतिविधिः**- प्रदत्तविषयस्य संस्कृते प्रथमं शुद्धोच्चारणम्, रटनम्, लेखनाभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
2	षडशीतिकारिकातः शतकारिकापर्यन्तम् **गतिविधिः**- प्रदत्तविषयस्य संस्कृते प्रथमं शुद्धोच्चारणम्, रटनम्, लेखनाभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
3	एकशतकारिकातः पञ्चविंशत्यधिकशतङ्कारिकापर्यन्तम्। **गतिविधिः**- प्रदत्तविषयस्य संस्कृते प्रथमं शुद्धोच्चारणम्, रटनम्, लेखनाभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
4	षड्विंशत्यधिकशतङ्कारिकातः चत्वारिंशदधिकशतङ्कारिकापर्यन्तम्। **गतिविधिः**- प्रदत्तविषयस्य संस्कृते प्रथमं शुद्धोच्चारणम्, रटनम्, लेखनाभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
5	एकचत्वारिंशदधिककारिकातः समग्रकारिकाः। **गतिविधिः**- प्रदत्तविषयस्य संस्कृते प्रथमं शुद्धोच्चारणम्, रटनम्, लेखनाभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
सारबिन्दुः(की वर्ड/टैग) :		
भागः स – अनुशंसिताध्ययनसंसाधनानि		
पाठ्यपुस्तकानि, सन्दर्भग्रन्थाः, अन्यसंसाधनानि		

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

क. अनुशंसितसहायकपुस्तकानि/ग्रन्थाः/अन्यपाठ्यसंसाधनानि/पाठ्यसामग्री-

1. वाक्यपदीयम्, सूर्यनारायण शुक्ल चौखम्बासुरभारतीप्रकाशनम्, वाराणसी
2. वाक्यपदीयम् (अम्बाकर्त्री) श्री पद्मश्री पण्डितरघुनाथशर्मा सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय वाराणसी

Reference Books

- अष्टाध्यायी - पाणिनिविरचिता, सम्पादनं - श्रीगोपालदत्तपाण्डेयः, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी - 221 001।
- परिभाषेन्दुशेखरः - महामहोपाध्याय-नागेशभट्टविरचितः, सम्पादकः – सदाशिवशास्त्री, चौखम्भासंस्कृतसंस्थानम्, के.३७/११६, गोपाल् मन्दिर् लेन्, वाराणसी – २२१ ००१
- महाभाष्यम् – पतञ्जलिविरचितम्, संस्कर्ता – श्रीगुरुप्रसादशास्त्री, सम्पादकः – श्रीनन्दकिशोरशास्त्री, प्रतिभाप्रकाशनं, २९/५, शक्तिनगर, दिल्ली – ११० ००७।
- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - भट्टोजिदीक्षितप्रणीता (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनीसहिता), सम्पादकः - म.म.पं.गिरिधरशर्मा चतुर्वेदः, म.म.पं.परमेश्वरानन्दशर्मा विद्याभास्करः, मोतिलाल बनारसीदास, बङ्गलो रोड, दिल्ली - 110 007।

ख. अनुशंसितडिजिटलप्लेटफार्मवेबलिंक

1. http://vedicheritage.gov.in

अनुशंसित-समकक्षः- ऑनलाईनपाठ्यक्रमः-

1. Sanskrit.inira.fr/
2. Learnsanskrit.cc/index
3. Swayam.gov.in

भागः द – अनुशंसितमूल्यांकनविधयः

अनुशंसितसततमूल्यांकनविधयः - लिखितपरीक्षा, आन्तरिकमूल्यांकनम्, साक्षात्कारविधिः, वाग्व्यवहारविधिः
अधिकतमांक : 100
सततव्यापकमूल्यांकनम् (CCE) अंकः 40 विश्वविद्यालयीयपरीक्षा (UE) अंकः 60

आन्तरिकमूल्यांकनम् : सततव्यापकमूल्यांकनम्(CCE) :	कक्षापरीक्षणम् Assignment/प्रस्तुतीकरणम्	पूर्णांकाः 40
आकलनम् : विश्वविद्यालयीयपरीक्षा :	अनुभागः (अ) : अतिलघूत्तरीयप्रश्नाः 5×1=5 अनुभागः (ब) : लघूत्तरीयप्रश्नाः 5×3=15 अनुभागः (स) : दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः 5×8=40	पूर्णांकाः 60

टिप्पणी :

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

भागः अ – **परिचयः**			
कार्यक्रम : **उपाधि पाठ्यक्रम**	कक्षा : **द्विवर्षीयः आचार्यः (स्नातकोत्तरः)**	सत्रार्द्धः **चतुर्थः**	सत्रम् **: 2025-26**
विषय : **नव्यव्याकरणम्**			

1.	पाठ्यक्रमस्य कूटः	PGO-VVNY42	
2.	पाठ्यक्रमस्य शीर्षकः	**महाभाष्यम् (9 आह्निकम्) वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जुषायाः लक्षणा व्यञ्चना च**	
3.	पाठ्यक्रमस्य प्रकारः	मुख्यविषयः (द्वितीयप्रश्नपत्रम्)	
4.	पूर्वापेक्षा **(Pre-requisite)**(यद्यस्ति काचित्)	विश्वविद्यालयानुदानायोग-नवदेहलीद्वारा प्राप्तमान्यताविश्वविद्यालयस्य संस्थानस्य वा स्नातकपरीक्षोत्तीर्णाः तत्समकक्षपरीक्षोत्तीर्णाः वा प्रवेष्टुमर्हाः।	
5.	पाठ्यक्रमस्य अध्ययनोपलब्धिः **(CLO)**	1. पाणिनिसूत्राणां सन्देहनिरसनपुरस्सरतात्पर्यज्ञानं भविष्यति। 2. वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषादिशा व्याकरणशास्त्रे पद-वाक्यादिषु शक्तिः इत्याख्या वृत्तिः कथं भवति, शाब्दबोधप्रकारः कः इति विषये छात्रः सम्यक् अवगतवान् भवति । अनेन सह इतरशास्त्रदृष्ट्या शक्त्यादिव्यापाराणामपि ज्ञानं प्राप्यते।	
6.	क्रेडिटमानम्	**05** क्रेडिट	
7.	पूर्णाङ्काः	अधिकतमाङ्काः 40+60	न्यूनतमोत्तीर्णाङ्काः 40

भागः ब – पाठ्यक्रमस्य विषयवस्तु		
व्याख्यानानां संख्या-ट्यूटोरियल-प्रायोगिक(प्रतिसप्ताहं – होरात्रयम्) : **L-T-P**		
एककः	**विषयः**	**व्याख्यानानां संख्या**
1	अदर्शनम् लोपः इत्यतः अलोन्त्यात्पूर्व उपधा । अदर्शनं लोपः अर्थस्य सञ्ज्ञा कर्तव्या। शब्दस्य वा इति विचारः, प्रत्ययस्य लुक् श्लुलुपः प्रत्ययग्रहणं किमर्थम् ? प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् प्रत्ययग्रहणं किमर्थम् ? लुक्युपन्यूनतमोत्तीर्णाङ्काःनं कर्तव्यम्, न लुमताङ्गस्य लुमिति प्रतिषेधे एकपदस्वरस्योपसंख्यानम्। अलोऽन्यात् पूर्व उपधा किमिदमल्ग्रहणमन्त्यविशेषणम्। कान्येतस्याः परिभाषायाः प्रयोजनानि ? इति विचारः विहितः। **गतिविधिः**- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
2	तस्मिन्निति निर्दिष्टेपूर्वस्य इत्यतः अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः इति सूत्रं पर्यन्तम् तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य तस्मादित्युत्तरस्य किमुदाहरणम् ? अथ निर्दिष्टग्रहणं किमर्थम् ? तस्मादित्युत्तरस्य किमुदाहरणम् ? अथ निर्दिष्टग्रहणं किमर्थम् ? स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसञ्ज्ञा रूपग्रहणं किमर्थम् ? अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः अप्रत्ययः इति किमर्थम् ? आकृतिग्रहणात् इत्यादीनां विचारः कृतः। **गतिविधिः**- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
3	तपरस्तत्कालस्य इति सूत्राद् आह्निकान्तं यावत् – तपरस्तत्कालस्य कथं निर्देशः कर्तव्यः? आदिरन्त्येन सहेता, येन विधिस्तदन्तस्य वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम् त्यदादीनि च एङ् प्राचां देशे इत्यादीनां विचारः वर्तते। **गतिविधिः**- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
4	वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जुषा- लक्षणानिरूपणम् – वैयाकरणमतेन लक्षणानिरूपणं, लक्षणाविषये मीमांसकादि-मतान्तराशयावगमनं च।	**15**

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

	गतिविधि:- लक्षणायाः उदाहरणं " गङ्गायां घोषः" इत्यस्य समन्वयः,अभ्यासः. तत्खण्डनमण्डनञ्च।	
5	वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जुषा- व्यञ्जनानिरूपणण् वैयाकरणमतेन व्यञ्जनानिरूपणम्। **गतिविधि**:- व्यञ्जनायाः उदाहरणं "गतोऽस्तमर्कः" इत्यस्य समन्वयः,अभ्यासः. तत्खण्डनमण्डनञ्च।	**15**

सारबिन्दुः(की वर्ड/टैग) :

भागः स – अनुशंसिताध्ययनसंसाधनानि

पाठ्यपुस्तकानि, सन्दर्भग्रन्थाः, अन्यसंसाधनानि

क. अनुशंसितसहायकपुस्तकानि/ग्रन्थाः/अन्यपाठ्यसंसाधनानि/पाठ्यसामग्री-

1. व्याकरणमहाभाष्य जयशङ्करलाल त्रिपाठी चौखम्बा कृष्णदास अकादमी
2. वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा - महामहोपाध्याय-नागेशभट्टविरचिता, सम्पादकः – सभापति-शर्मोपाध्यायः, चौखम्भासंस्कृतसंस्थानम्, के.३७/११६, गोपाल् मन्दिर् लेन्, वाराणसी – २२१ ००१
3. व्याकरणमहाभाष्य आचार्य मधुसूदनप्रसादमिश्र चौखम्बाविद्याभवन वाराणसी
4. व्याकरणमहाभाष्य के.वी. अभ्यङ्कर भण्टारकर आरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पुणे
5. हरिनारायणतिवारी चौखम्बासुरभारती वाराणसी, उ.प्र.
6. वैयाकरणसिद्धान्तकल्पतरुः, डॉ. पङ्कजकुमारव्यासः, कविकुलगुरुकालिदाससंस्कृतविश्वविद्यालयः, रामटेक्

Reference Books

- अष्टाध्यायी - पाणिनिविरचिता, सम्पादनं - श्रीगोपालदत्तपाण्डेयः, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी - 221 001।
- परिभाषेन्दुशेखरः - महामहोपाध्याय-नागेशभट्टविरचितः, सम्पादकः – सदाशिवशास्त्री, चौखम्भासंस्कृतसंस्थानम्, के.३७/११६, गोपाल् मन्दिर् लेन्, वाराणसी – २२१ ००१
- महाभाष्यम् – पतञ्जलिविरचितम्, संस्कर्ता – श्रीगुरुप्रसादशास्त्री, सम्पादकः – श्रीनन्दकिशोरशास्त्री, प्रतिभाप्रकाशनं, २९/५, शक्तिनगर, दिल्ली – ११० ००७।
- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - भट्टोजिदीक्षितप्रणीता (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनीसहिता), सम्पादकः - म.म.पं.गिरिधरशर्मा चतुर्वेदः, म.म.पं.परमेश्वरानन्दशर्मा विद्याभास्करः, मोतिलाल बनारसीदास, बङ्गलो रोड, दिल्ली - 110 007।

ख. अनुशंसितडिजिटलप्लेटफार्मवेबलिंक

1. http://vedicheritage.gov.in

अनुशंसित-समकक्षः- ऑनलाईनपाठ्यक्रमः-

1. Sanskrit.inira.fr/
2. Learnsanskrit.cc/index
3. Swayam.gov.in

भागः द – अनुशंसितमूल्यांकनविधयः

अनुशंसितसततमूल्यांकनविधयः - लिखितपरीक्षा, आन्तरिकमूल्यांकनम्, साक्षात्कारविधिः, वाग्व्यवहारविधिः
अधिकतमांक : 100
सततव्यापकमूल्यांकनम् (CCE) अंकः 40 विश्वविद्यालयीयपरीक्षा (UE) अंकः 60

आन्तरिकमूल्यांकनम् : सततव्यापकमूल्यांकनम्(CCE) :	कक्षापरीक्षणम् Assignment/प्रस्तुतीकरणम्	पूर्णांकाः 40
आकलनम् : विश्वविद्यालयीयपरीक्षा :	अनुभागः (अ) : अतिलघूत्तरीयप्रश्नाः 5×1=5 अनुभागः (ब) : लघूत्तरीयप्रश्नाः 5×3=15 अनुभागः (स) : दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः 5×8=40	पूर्णांकाः 60

टिप्पणी :

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

भागः अ – परिचयः			
कार्यक्रम : **उपाधि पाठ्यक्रम**	कक्षा : **द्विवर्षीयः आचार्यः (स्नातकोत्तरः)**	सत्रार्द्धः **चतुर्थः**	सत्रम् **: 2025-26**
विषय : **नव्यव्याकरणम्**			

1.	पाठ्यक्रमस्य कूटः	PGO-VVNY43	
2.	पाठ्यक्रमस्य शीर्षकः	**सर्वदर्शनसङ्ग्रहः (वैशेषिकदर्शनम् इत्यारभ्य शाङ्करदर्शनं यावत्)**	
3.	पाठ्यक्रमस्य प्रकारः	मुख्यविषयः (तृतीयप्रश्नपत्रम्)	
4.	पूर्वापेक्षा **(Pre-requisite)**(यद्यस्ति काचित्)	विश्वविद्यालयानुदानायोग-नवदेहलीद्वारा प्राप्तमान्यताविश्वविद्यालयस्य संस्थानस्य वा स्नातकपरीक्षोत्तीर्णाः तत्समकक्षपरीक्षोत्तीर्णाः वा प्रवेष्टुमर्हाः।	
5.	पाठ्यक्रमस्य अध्ययनोपलब्धिः **(CLO)**	1. सप्तपदार्थानां एवं षोडशपदार्थानां सम्यक् ज्ञानं। 2. साङ्ख्ययोगदर्शनयोः जैमिनीयशाङ्करदर्शनयोश्च सिद्धान्तस्य ज्ञानं भविष्यति।	
6.	क्रेडिटमानम्	**05** क्रेडिट	
7.	पूर्णाकाः	अधिकतमाङ्काः 40+60	न्यूनतमोत्तीर्णाङ्काः 40

भागः ब – पाठ्यक्रमस्य विषयवस्तु		
व्याख्यानानां संख्या-ट्यूटोरियल-प्रायोगिक(प्रतिसप्ताहं – होरात्रयम्) : **L-T-P**		
एककः	**विषयः**	**व्याख्यानानां संख्या**
1	वैशेषिकदर्शनम् न्यायदर्शनञ्च। अत्र न्यायवैशेषिकदर्शनयोः प्रमेयप्रमाणतत्त्वाणाञ्च विचारः वर्तते। **गतिविधिः**:- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तदार्शनिकविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम्।	**15**
2	जैमिनीयदर्शनम् , व्याकरणदर्शनम्। अत्र जैमिनीयव्याकरणदर्शनयोः प्रमेयप्रमाणतत्त्वाणाञ्च विचारः वर्तते। **गतिविधिः**:- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तदार्शनिकविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम्।	**15**
3	साङ्ख्यदर्शनम्। अत्र सांख्यदर्शने प्रमेयप्रमाण-पञ्चविंशतितत्त्वाणाञ्च विचारः वर्तते। **गतिविधिः**:- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तदार्शनिकविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम्।	**15**
4	योगदर्शनम्। अत्र योगदर्शने प्रमेयप्रमाण-षट्विंशतितत्त्वाणाञ्च विचारः वर्तते। **गतिविधिः**:- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तदार्शनिकविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम्।	**15**

अध्यक्षः
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

5	शाङ्करदर्शनम् अत्र शाङ्करदर्शने प्रमेयप्रमाणतत्त्वाणाञ्च विचारः वर्तते। **गतिविधिः**- संस्कृते शङ्कासमाधानपूर्वकम् उपर्युक्तदार्शनिकविषयस्य लेखनस्य अभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**

सारबिन्दुः(की वर्ड/टैग) :

भागः स – अनुशंसिताध्ययनसंसाधनानि

पाठ्यपुस्तकानि, सन्दर्भग्रन्थाः, अन्यसंसाधनानि

क. अनुशंसितसहायकपुस्तकानि/ग्रन्थाः/अन्यपाठ्यसंसाधनानि/पाठ्यसामग्री-

1. माधवाचार्य – सर्वदर्शनसङ्ग्रह प्रो. उमाशङ्कर ऋषि शर्मा -चौखम्बाविद्याभवन वाराणसी, उ.प्र.
2. माधवाचार्य – सर्वदर्शनसङ्ग्रह डां माधव जनार्दन रटाटे द भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी

Reference Books

- अष्टाध्यायी - पाणिनिविरचिता, सम्पादनं - श्रीगोपालदत्तपाण्डेयः, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी - 221 001।
- परिभाषेन्दुशेखरः - महामहोपाध्याय-नागेशभट्टविरचितः, सम्पादकः – सदाशिवशास्त्री, चौखम्भासंस्कृतसंस्थानम्, के.३७/११६, गोपाल् मन्दिर् लेन्, वाराणसी – २२१ ००१
- महाभाष्यम् – पतञ्जलिविरचितम्, संस्कर्ता – श्रीगुरुप्रसादशास्त्री, सम्पादकः – श्रीनन्दकिशोरशास्त्री, प्रतिभाप्रकाशनं, २९/५, शक्तिनगर, दिल्ली – ११० ००७।
- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - भट्टोजिदीक्षितप्रणीता (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनीसहिता), सम्पादकः - म.म.पं.गिरिधरशर्मा चतुर्वेदः, म.म.पं.परमेश्वरानन्दशर्मा विद्याभास्करः, मोतिलाल बनारसीदास, बङ्गलो रोड, दिल्ली - 110 007।

ख. अनुशंसितडिजिटलप्लेटफार्मवेबलिंक

1. http://vedicheritage.gov.in

अनुशंसित-समकक्षः- ऑनलाईनपाठ्यक्रमः-

1. Sanskrit.inira.fr/
2. Learnsanskrit.cc/index
3. Swayam.gov.in

भागः द – अनुशंसितमूल्यांकनविधयः

अनुशंसितसततमूल्यांकनविधयः - लिखितपरीक्षा, आन्तरिकमूल्यांकनम्, साक्षात्कारविधिः, वाग्व्यवहारविधिः
अधिकतमांक : 100
सततव्यापकमूल्यांकनम् (**CCE**) अंकः 40 विश्वविद्यालयीयपरीक्षा (**UE**) अंकः 60

आन्तरिकमूल्यांकनम् : सततव्यापकमूल्यांकनम्(**CCE**) :	कक्षापरीक्षणम् Assignment/प्रस्तुतीकरणम्	पूर्णांकाः 40
आकलनम् : विश्वविद्यालयीयपरीक्षा :	अनुभागः (अ) : अतिलघूत्तरीयप्रश्नाः 5×1=5 अनुभागः (ब) : लघूत्तरीयप्रश्नाः 5×3=15 अनुभागः (स) : दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः 5×8=40	पूर्णांकाः 60

टिप्पणी :

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

भागः अ – **परिचयः**			
कार्यक्रम : **उपाधि पाठ्यक्रम**	कक्षा : **द्विवर्षीयः आचार्यः (स्नातकोत्तरः)**	सत्रार्द्धः- **चतुर्थः**	सत्रम् **: 2025-26**
विषयः नव्यव्याकरणम्			

1.	पाठ्यक्रमस्य कूटः	PGO-VVNY44	
2.	पाठ्यक्रमस्य शीर्षकः	**व्याकरणशास्त्रीयनिबन्धः**	
3.	पाठ्यक्रमस्य प्रकारः	मुख्यविषयः (चतुर्थप्रश्नपत्रम्)	
4.	पूर्वापेक्षा **(Pre-requisite)**(यद्यस्ति काचित्)	विश्वविद्यालयानुदानायोग-नवदेहलीद्वारा प्राप्तमान्यताविश्वविद्यालयस्य संस्थानस्य वा स्नातकपरीक्षोत्तीर्णाः तत्समकक्षपरीक्षोत्तीर्णाः वा प्रवेष्टुमर्हाः।	
5.	पाठ्यक्रमस्य अध्ययनोपलब्धिः **(CLO)**	1. शाब्दबोधप्रक्रियायाः परिज्ञानम्भविष्यति। 2. व्याकरणशास्त्रपरम्परायाः परिज्ञानम्भविष्यति। 3. पारिभाषिकशब्दावल्याः परिज्ञानम्भविष्यति।	
6.	क्रेडिटमानम्	**05** क्रेडिट	
7.	पूर्णाङ्काः	अधिकतमाङ्काः 40+60	न्यूनतमोत्तीर्णाङ्काः 40

भागः ब – पाठ्यक्रमस्य विषयवस्तु		
व्याख्यानानां संख्या-ट्यूटोरियल-प्रायोगिक(प्रतिसप्ताहं – होरात्रयम्) : **L-T-P**		
एककः	**विषयः**	**व्याख्यानानां संख्या**
1	महाभाष्यस्य मुख्य-गौणप्रयोजनानि पञ्चमुख्यानां त्रयोदशगौणप्रयोजनानां ज्ञानं भवति। **गतिविधिः**- प्रदत्तविषयस्य संस्कृते प्रथमं शुद्धोच्चारणम्, रटनम्, लेखनाभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
2	वैयाकरणसिद्धान्तकल्पतरु इति ग्रन्थस्थधात्वर्थविचारः। वैयाकरणमते धात्वर्थः क इति परिचयेन सह पारिभाषिकफलव्यापारयोर्लक्षणज्ञानसम्पादनम्, आख्यातार्थः कः इति ज्ञानेन सह क्व फले आश्रयान्वयः क्व च व्यापारे इत्यादिविषयकज्ञानसम्पादनम्। मीमांसकनैयायिकमतखण्डनपुरस्सरं धातोर्व्यापारवाचित्वसंस्थापनम्। व्यापारस्य धात्वर्थत्वे प्रमाणान्तराणां ज्ञानम्। व्यापारस्य धातुवाच्यत्वसाधकप्रमाणज्ञानेन सह कारकाणां व्यापारे (भावनायां) एव अन्वये प्रमाणोपन्यासज्ञानसम्पादनम्। कारकाणां क्रियान्वयस्वीकारः दोषयुक्तः तेन कर्त्रादौ विहितानामिन्यादीनामपि क्रिययैवान्वय इति प्रतिपादनेन प्रकरणान्ते धातोरेव भावना वाच्या नाख्यातप्रत्ययेन इति ज्ञानम्। **गतिविधिः**- प्रदत्तविषयस्य संस्कृते प्रथमं शुद्धोच्चारणम्, रटनम्, लेखनाभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
3	वैयाकरणसिद्धान्तकल्पतरु इति ग्रन्थस्थलकारार्थसुबर्थविचारः वैयाकरणमते लकाराणां कः अर्थः? इत्यादि प्रत्येकं लकारस्य अर्थविशेषस्य मतमतान्तरनिरूपणपुरःसरं विस्तरेण परिचयः। सप्तविभक्तीनां विशिष्य के के अर्थाः इति प्रत्येकं विभक्तेः अर्थनिरूपणेन नैयायिकादीनां मतानि संदूष्य वैयाकरणसिद्धान्तस्य परिचयः। **गतिविधिः**- प्रदत्तविषयस्य संस्कृते प्रथमं शुद्धोच्चारणम्, रटनम्, लेखनाभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**
4	मुख्याः परिभाषाः	**15**

[illegible signature]
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)

	उभयगतिरिह भवति, यदागमास्तद्गुणीभूतास्तद्ग्रहणेन गृह्यन्ते, यत्रानेकविधमान्तर्यं तत्र स्थानत आन्तर्यं बलीयः, गौणमुख्ययोः मुख्येसम्प्रत्ययः,सन्निपातलक्षणविधिरनिमित्तस्य तद्विघातस्य, पूर्वं ह्यपवादा अभिनिविशन्ते पश्चादुत्सर्गाः, प्रातिपदिकग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि ग्रहणम्, लक्षणप्रतिपदोक्तयोः प्रतिपदोक्तस्यैव ग्रहणम् सकृद्गतौ विप्रतिषेधे यद् बाधितं तद् बाधितमेव, गतिकारकोपपदानां कृद्भिः सह समासवचनं प्राक् सुबुत्पत्तेः , असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे इति परिभाषाणां ज्ञानं भवति। **गतिविधिः**- प्रदत्तविषयस्य संस्कृते प्रथमं शुद्धोच्चारणम्, रटनम्, लेखनाभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	
5	वैयाकरणसिद्धान्तकल्पतरु इति ग्रन्थस्थस्फोटवादविमर्शः स्फोटः, स्फोटभेदाः, पदस्फोटः वर्णस्फोटः अखण्डपदवाक्यस्फोटाः जातिस्फोटस्यैव मुख्यता इत्यादीनां विचरणा विहिता। **गतिविधिः**- प्रदत्तविषयस्य संस्कृते प्रथमं शुद्धोच्चारणम्, रटनम्, लेखनाभ्यासः, कक्षायां सभायां वा उपस्थापनम् ।	**15**

सारबिन्दुः(की वर्ड/टैग) :

भागः स – अनुशंसिताध्ययनसंसाधनानि

पाठ्यपुस्तकानि, सन्दर्भग्रन्थाः, अन्यसंसाधनानि

क. अनुशंसितसहायकपुस्तकानि/ग्रन्थाः/अन्यपाठ्यसंसाधनानि/पाठ्यसामग्री-

1. संस्कृतसाहित्येतिहासः आचार्यलोकमणिदहालः चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, उ.प्र.
2. व्याकरण शास्त्र का इतिहास श्री युधिष्ठिर मीमांसक बहालगढ, सोनीपत, हरियाणा
3. काशी की पाण्डित्य परम्परा आ. बलदेव उपाध्याय ,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन ,वाराणसी
4. प्रो.अशोक चन्द्र गौड चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन ,वाराणसी
5. वैयाकरणसिद्धान्तकल्पतरुः, डॉ. पङ्कजकुमारव्यासः, कविकुलगुरुकालिदाससंस्कृतविश्वविद्यालयः, रामटेक्

Reference Books

- अष्टाध्यायी - पाणिनिविरचिता, सम्पादनं - श्रीगोपालदत्तपाण्डेयः, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी - 221 001।
- परिभाषेन्दुशेखरः - महामहोपाध्याय-नागेशभट्टविरचितः, सम्पादकः – सदाशिवशास्त्री, चौखम्भासंस्कृतसंस्थानम्, के.३७/११६, गोपाल् मन्दिर् लेन्, वाराणसी – २२१ ००१
- महाभाष्यम् – पतञ्जलिविरचितम्, संस्कर्ता – श्रीगुरुप्रसादशास्त्री, सम्पादकः – श्रीनन्दकिशोरशास्त्री, प्रतिभाप्रकाशनं, २९/५, शक्तिनगर, दिल्ली – ११० ००७।

ख. अनुशंसितडिजिटलप्लेटफार्मवेबलिंक

1. http://vedicheritage.gov.in

अनुशंसित-समकक्षः- ऑनलाईनपाठ्यक्रमः-

1. Sanskrit.inira.fr/
2. Learnsanskrit.cc/index
3. Swayam.gov.in

भागः द – अनुशंसितमूल्यांकनविधयः

अनुशंसितसततमूल्यांकनविधयः - लिखितपरीक्षा, आन्तरिकमूल्यांकनम्, साक्षात्कारविधिः, वाग्व्यवहारविधिः
अधिकतमांक : 100
सततव्यापकमूल्यांकनम् (CCE) अंकः 40 विश्वविद्यालयीयपरीक्षा (UE) अंकः 60

आन्तरिकमूल्यांकनम् : सततव्यापकमूल्यांकनम्(CCE) :	कक्षापरीक्षणम् Assignment/प्रस्तुतीकरणम्	पूर्णांकाः 40
आकलनम् : विश्वविद्यालयीयपरीक्षा :	अनुभागः (अ) : अतिलघूत्तरीयप्रश्नाः 5×1=5 अनुभागः (ब) : लघूत्तरीयप्रश्नाः 5×3=15 अनुभागः (स) : दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः 5×8=40	पूर्णांकाः 60

टिप्पणी :

अध्यक्ष
व्याकरण विभाग
म.पा.सं.एवं वै.वि.वि.
उज्जैन (म.प्र.)